REVIEW OF RESEARCH
ISSN: 2249-894X
IMPACT FACTOR : 5.7631(UIF)
VOLUME - 11 | ISSUE - 7 | APRIL - 2022

हिंदी कथा साहित्य में प्रेमचंद का योगदान एक समीक्षक अध्ययन

प्रा. प्रमोद किशनराम घन
सहाय्यक प्राध्यापक एवं विभाग प्रमुख, हिंदी
तोष्णीवाल महाविद्यालय, सेनगाव जिल्हा हिंगोली.

सारांश:

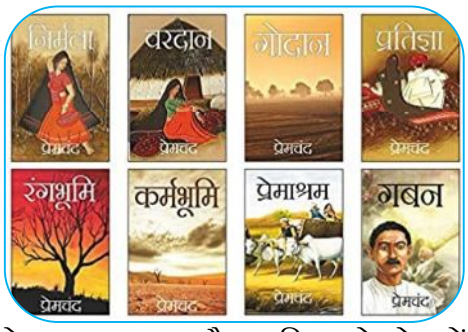

हिंदी उपन्यासों की परंपरा इतनी गहरी और रंगीन है कि इस छोटे से लेख में विषय के साथ न्याय करना असंभव है। प्रेमचंद ने हिन्दी साहित्य को एक निश्चित दिशा दी है। प्रेमचंद आज भी उतने ही प्रासंगिक हैं जितने वे अपने समय में थे, लेकिन किसान जीवन की अपनी समझ और समझ को देखते हुए उनकी प्रासंगिकता और बढ़ जाती है। प्रेमचंद हिन्दी साहित्य के अनूठे और अद्भुत लेखक हैं, जो किसान जीवन का यथार्थ चित्रण करते हैं। प्रेमचंद के उपन्यासों में समकालीन परिस्थितियों का जितना समावेश है, उतना ही उन्हें आज भी काफी हद तक देखा जा सकता है। साहित्य के क्षेत्र में प्रेमचंद का योगदान अतुलनीय है। उन्होंने कहानियों और उपन्यासों के माध्यम से लोगों को साहित्य से जोड़ने का काम किया, उनके द्वारा लिखे गए उपन्यास और कहानियां आज भी प्रासंगिक हैं।

प्रस्तावना:

प्रेमचंद का जन्म ३१ जुलाई १८८० को वाराणसी, उत्तर प्रदेश के लम्ही गांव में हुआ था। मुंशी प्रेमचंद का असली नाम धनपत राय था। उनके पिता अजायबारी डाकघर में क्लर्क थे। जब वे छोटे थे तभी उनकी मां का निधन हो गया था और उनका बचपन उनकी सौतेली मां से परेशान था। धनपत को बचपन से ही कहानियाँ सुनने का शौक था। इस शौक ने उन्हें एक महान कहानीकार और उपन्यासकार बना दिया। प्रेमचंद की शिक्षा उर्दू से शुरू हुई। पढ़ाई में तेज होने के कारण उसने जल्द ही मैट्रिक की परीक्षा पास कर ली। इंटर और बीए भी कड़ी मेहनत के चलते जल्दी पास हो गए। ग्रेजुएशन के बाद प्रेमचंद ने कम उम्र में ही शादी कर ली थी। लेकिन योग्य पत्नी न होने के कारण उन्होंने बाल विधवा शिवरानी देवी से विवाह कर लिया। प्रेमचंद के कलम नाम से लिखने वाले धनपत राय श्रीवास्तव हिंदी और उर्दू भाषाओं के महानतम भारतीय लेखकों में से एक हैं। उन्हें मुंशी प्रेमचंद और नवाब राय के नाम से भी जाना जाता है। उनका नाम सम्राट उपन्यास के नाम पर भी रखा गया था। प्रसिद्ध बंगाली उपन्यासकार सरचंद्र चट्टोपाध्याय ने सबसे पहले उन्हें इसी नाम से पुकारा।

साहित्यिक योगदान:

प्रेमचंद उनका साहित्यिक नाम था और उन्होंने कई वर्षों के बाद इस नाम को अपनाया। उनका असली नाम धनपत राय था। जब उन्होंने सरकारी सेवा में रहते हुए कहानियाँ लिखना शुरू किया, तो उन्होंने नवाब राय का नाम ग्रहण किया। कई दोस्त उन्हें जीवन भर नवाब कहकर संबोधित करते रहे। जब सरकार ने उनकी लघु कथाओं का पहला संग्रह श्सोजे वतनश जब्त कर लिया तो उन्हें नवाब राय नाम छोड़ना पड़ा। उनके बाद के अधिकांश साहित्य प्रेमचंद के नाम से प्रकाशित हुए। इस अवधि के दौरान प्रेमचंद ने बड़े उत्साह के साथ कहानियाँ पढ़ना शुरू किया। एक तम्बाकू - विक्रेता की दुकान में उन्होंने अक्षय भंडार को श्तिलिस्मे होशरुबाश कहानी सुनाई। इस पौराणिक गाथा के लेखक फैजी कहे जाते हैं, जिन्होंने अकबर के मनोरंजन के लिए इन कहानियों को लिखा था। प्रेमचंद इन कहानियों को पूरे एक साल तक सुनते रहे और उन्हें सुनकर उनकी रचनात्मकता बहुत उत्तेजित हो गई। प्रेमचंद ने कथा साहित्य की अन्य अमूल्य रचनाएँ भी पढ़ीं। इसमें रेनाल्ड की कृतियाँ श्सरसारश और श्लंदन - रहस्यश शामिल थी। गोरखपुर के एक पुस्तक विक्रेता बुधिलाल से उसकी दोस्ती हो गई। वह स्कूल में अपनी दुकान की चाबियां बेचता था और बदले में कुछ उपन्यास पढ़ने के लिए कुछ समय लेता था। इस तरह उन्होंने दो-तीन साल में सैकड़ों उपन्यास पढ़े होंगे। प्रेमचंद के पिता उस समय गोरखपुर में पोस्टमास्टर के पद पर कार्यरत थे। प्रेमचंद ने गोरखपुर में ही अपनी पहली साहित्यिक रचना की थी।

प्रेमचंद के साहित्य में शिव का सर्वत्र राज्य है - सत्य और सौंदर्य शिव के अनुयायी के रूप में आते हैं। उनकी कला जीवन के लिए स्वीकृत के रूप में थी, और जीवन उनके लिए वर्तमान सामाजिक जीवन था। वे वर्तमान से कभी दूर नहीं होते। प्रेमचंद ने न जीवन का गौरवपूर्ण भजन गाया, न भविष्य के चमत्कारों की कल्पना की। उन्होंने अतीत के गुणों को नहीं गाया या अपने पाठकों के सामने भविष्य के ग्लैमरस सपनों का भ्रम नहीं फैलाया। उन्होंने वर्तमान स्थिति का ईमानदारी से विश्लेषण करना जारी रखा। उसने देखा कि बाधा भीतर है, बाहर नहीं। इन किसानों, इन गरीब लोगों ने महसूस किया कि दुनिया की कोई ताकत उन्हें दबा नहीं सकती है, कि वे निश्चित रूप से अजेय होंगे। वह अपने मौजी पात्र (मेहता) से कहता है, 'मुझे अतीत की परवाह नहीं है, मुझे भविष्य की परवाह नहीं है। भविष्य की चिंता हमें कायर बनाती है। भूतों का भार आपकी कमर तोड़ देता है। हमारे पास इतनी कम चेतना है कि इसे अतीत और भविष्य में खींचकर खो जाता है। हम अपने ऊपर एक बेकार बोझ ढोते हुए, रूढ़ियों और विश्वासों और इतिहास के ढेर के नीचे दबे हुए हैं।'

उपन्यास:

प्रेमचंद का पहला उपन्यास श्सेवासदनश १९१८ में प्रकाशित हुआ था। इसके साथ एक नए युग की शुरुआत होती है। इसे हिंदी उपन्यास के श्प्रेमचंद युगश या श्विकास युगश के रूप में जाना जाता है। यह काल भारतीय स्वतंत्रता संग्राम और समाज सुधार आंदोलन का काल था। ब्रिटिश शासन और शिक्षा और सभ्यता का प्रभाव हमारे समाज में एक नई चेतना और गर्व की भावना पैदा कर रहा था, जो कि कुरीतियों, अंधविश्वासों और धार्मिक दिखावे के खिलाफ विद्रोह कर रहा था। महात्मा गांधी पूरी तरह से राजनीतिक मंच पर आ गए थे। सत्य, अहिंसा, सदाचार, सत्याग्रह, अस्पृश्यता विरोधी, महिलाओं की प्रगति, ग्राम सुधार, अस्पृश्यता, स्वदेशी आदि से संबंधित उनकी विचारधाराओं का लोगों पर बहुत प्रभाव पड़ने लगा था। अन्याय और अत्याचार के विरोध की एक नई शक्ति का उदय हुआ। लोगों में दमनकारी समाज, सामंती वर्ग आदि का सामना करने का साहस था। रूसी पुनर्जागरण, विज्ञान के आविष्कार आदि का हमारे सार्वजनिक ज्ञान पर बहुत प्रभाव पड़ा। इसलिए कल्पना, रोमांस और चमत्कारी अभिनय के जाल से मुक्त होकर, हिंदी उपन्यासकारों ने वास्तविकता की कठोर सतह पर कदम रखा और सामाजिक भलाई के लिए साहित्य का निर्माण शुरू किया।

प्रेमचंद के उपन्यासों में सभी गुण थे। वे मनोरंजन के साधन और सत्य के वाहक दोनों हैं। उनके उपन्यासों की एक प्रमुख विशेषता उनका आदर्शवाद है। वह पात्रों और उनकी प्रवृत्तियों को निर्देशित करने में

आदर्श हैं। इस प्रकार 'सेवासदन' से 'कर्मभूमि' तक प्रेमचंदजी के सुधारवादी और आदर्शवादी रूप को देखा जा सकता है। जिसमें वे आश्रमों और घरों की कल्पना करते नजर आ रहे हैं। उन्होंने इन उपन्यासों में अपने समय की सामाजिक-राजनीतिक घटनाओं का संपूर्ण चित्र प्रस्तुत किया है। उनके उपन्यास आदर्शों, कर्तव्य, प्रेम, करुणा, सामाजिक सुधार, देशभक्ति, सत्याग्रह, अहिंसा, महिलाओं की पीड़ा, मध्यम वर्ग के पुरुष की त्रासदी, कृषि जीवन की समस्याओं, मेहनतकश लोगों के संघर्ष आदि से संबंधित हैं। उनके उपन्यासों में आदर्शवाद और यथार्थवाद का अद्भुत मेल देखा जा सकता है। यद्यपि प्रेमचंद जी अपने प्रारंभिक जीवन में एक आदर्शवादी हैं, लेकिन जीवन को उबाऊ होते देखकर उन्हें वास्तविकता का सामना करना पड़ता है। ताकि दोनों को मिलाकर आसानी से अपना जीवन पूरा किया जा सके। 'गोदान' में उनका आदर्शवाद पूरी तरह चकनाचूर हो गया है और उसकी जगह क्रूर वास्तविकता ने ले ली है। इसे जीवन का महाकाव्य भी कहा जा सकता है। प्रेमचंद के पहले के उपन्यासकारों या उनके समकालीनों की भाषा कठिन और जटिल थी। केवल देवकी नंदन खत्री की भाषा तेजतर्रार थी। प्रेमचंदजी ने भाषा की सरलता और सरलता को शैली के भेद में बदल दिया।

कहानी:

उनकी अधिकांश कहानियाँ निम्न और मध्यम वर्ग को दर्शाती हैं। डॉ. कमलकिशोर गोयनका ने प्रेमचंद की पूरी हिंदी-उर्दू कहानी को प्रेमचंद कहानी रचनावाली के रूप में प्रकाशित किया है। उनके अनुसार, प्रेमचंद ने कुल ३०१ कहानियाँ लिखीं, जिनमें से ३ अभी भी अप्रकाशित हैं। प्रेमचंद की लघु कथाओं का पहला संग्रह जून १९०८ में सोजे वतन शीर्षक से प्रकाशित हुआ था। इस संग्रह की पहली कहानी दुनिया का सबसे अनमोल रतन उनकी पहली प्रकाशित कहानी मानी जाती है। डॉ. गोयनका के अनुसार कानपुर की उर्दू पत्रिका जमाना के अप्रैल अंक में प्रकाशित उनकी पहली प्रकाशित कहानी वर्ल्डली लव एंड कंट्री-लव (इश्के दुनिया और हुबे वतन) है। कुल नौ कहानी संग्रह प्रकाशित हुए - सोज़े वतन, 'सप्त सरोज', 'नवनिधि', 'प्रेमपूर्णिमा', 'प्रेम - पचीसी', 'प्रेम - प्रतिमा', 'प्रेम-द्वादशी', 'समरयात्रा', 'मानसरोवर': भाग एक व दो और 'कफन'। उनकी मृत्यु के बाद उनकी कहानियाँ 'मानसरोवर' शीर्षक से ८ भागों में प्रकाशित हुई।

जैसे ही प्रेमचंद को साहित्य के अधिकार से मुक्त किया गया, विभिन्न संपादकों और प्रकाशकों ने प्रेमचंद की कहानियों के संग्रह संकलित और प्रकाशित किए। उनकी कहानियों में विभिन्न प्रकार के विषय और शिल्प हैं। उन्होंने अपनी कहानियों में मनुष्य से लेकर पशु-पक्षी तक सभी वर्गों को मुख्य पात्र के रूप में चित्रित किया है। उनकी कहानियों में किसानों, मजदूरों, महिलाओं, दलितों आदि की समस्याओं को गंभीरता से चित्रित किया गया है। उन्होंने समाज सुधार, देशभक्ति, स्वतंत्रता संग्राम आदि पर कहानियाँ लिखी हैं। उनकी ऐतिहासिक कहानियाँ और प्रेम कहानियाँ भी बहुत लोकप्रिय थीं।

साहित्य की विशेषता:

प्रेमचंद की रचनात्मक दृष्टि को विभिन्न साहित्यिक रूपों के माध्यम से व्यक्त किया गया था। वे बहुमुखी प्रतिभा के धनी लेखक थे। प्रेमचंद के कार्यों के माध्यम से समकालीन इतिहास बोलता है। उन्होंने अपनी कला के माध्यम से आम आदमी की भावनाओं, स्थितियों और समस्याओं को प्रस्तुत किया। उनकी रचनाएँ भारत में सबसे बड़ी और सबसे व्यापक श्रेणी की कृतियाँ हैं। प्रेमचंद ने अपनी कहानियों में मानव प्रकृति के मौलिक महत्व को व्यक्त किया है। 'बड़े घर की बेटी' आनंदी अपने देवर से परेशान थी, क्योंकि कायर ने उससे बदतमीजी से बात की और उसे घसीटकर थप्पड़ मार दिया। जब उसे पता चलता है कि उनका परिवार टूट रहा है और उसके साले ने पश्चाताप किया है, तो वह उसे माफ कर देती है और अपने पति को शांत करती है। इसी तरह 'नमक का दारोगा' बहुत ईमानदार आदमी है। इसे सभी को घूस देकर नहीं लूटा जा सकता। सरकार उसे सख्त कार्रवाई में बर्खास्त कर देती है, लेकिन सेठ, जिसकी रिश्वत से उसने इनकार कर दिया, उसे एक उच्च पद पर नियुक्त करता है। वह ईमानदार और कर्तव्यनिष्ठ कर्मचारी

चाहता है। इस प्रकार प्रेमचंद की दुनिया में अच्छे कर्मों का फल सुखद होता है। वास्तविक जीवन में ऐसी आश्चर्यजनक घटनाएं कम ही होती हैं। गांव के पंच भी व्यक्तिगत दुश्मनी और शिकायतों को भूलकर सच्चा न्याय करते हैं। उनकी आत्मा इस दिशा में उनका मार्गदर्शन करती है। असंख्य मतभेदों, पूर्वाग्रहों, अंधविश्वासों, जातिगत विवादों और कट्टरता से तबाह गाँव में भी ऐसा न्याय-धर्म अकल्पनीय लगता है। प्रेमचंद की कहानियों का हिंदी में संग्रह मुंबई के एक प्रसिद्ध प्रकाशन गृह, हिंदी ग्रंथ - रत्नाकर द्वारा प्रकाशित किया गया था। संग्रह 'नवनिधि' शीर्षक के तहत प्रकाशित हुआ था और इसमें 'राजा हरदौल' और 'रानी सारंधा' जैसी बुंदेला वीरता की प्रसिद्ध कहानियाँ शामिल हैं।

रचनाएँ:

कम ही लोग जानते होंगे कि महान कथाकार मुंशी प्रेमचंद ने पहले अपनी महान रचनाओं की रूपरेखा अंग्रेजी में लिखी और बाद में उनका हिंदी या उर्दू में अनुवाद किया और उनका विस्तार किया। प्रेमचंद के व्यक्तित्व और कार्यों पर सात दिवसीय प्रदर्शनी का आयोजन बहुकला केंद्र भारत भवन, भोपाल में रजत जयंती वर्ष के अवसर पर किया गया है, जिसमें उनकी कई हिंदी और उर्दू कृतियों को अंग्रेजी में प्रदर्शित किया गया है। प्रदर्शनी के आयोजक और हिंदी के आलोचक डॉ. कमलकिशोर गोयनका ने इस अवसर पर कहा कि प्रेमचंद हिंदी और उर्दू के साथ-साथ अंग्रेजी में भी पारंगत थे। चिकित्सक गोयनका ने कहा कि प्रेमचंद अपनी रचनाओं की रूपरेखा अंग्रेजी में ही लिखते थे। इसके बाद वे इसका अनुवाद करते थे और रचना को हिंदी या उर्दू में पूरा करते थे। चिकित्सक गोयनका ने कहा कि प्रेमचंद ने पहले भी अपनी महान कृति 'गोदान' की रूपरेखा अंग्रेजी में लिखी थी, जिसकी मूल प्रति यहां प्रदर्शित है। उन्हें अंग्रेजी में लिखे गए उनके एक अलिखित उपन्यास की रूपरेखा भी प्राप्त हुई है। प्रेमचंद ने अंग्रेजी में रंगभूमि और कायाकल्प उपन्यासों की रूपरेखा भी लिखी। उनकी डायरी भी अंग्रेजी में लिखी हुई मिली है। इसके साथ ही आचार्य नरेंद्र देव का प्रेमचंद को पत्र, पंडित जवाहरलाल नेहरू द्वारा उनकी बेटी को लिखे गए अंग्रेजी पत्रों को हिंदी में अनुवाद के लिए प्रदर्शित किया गया है। प्रेमचंद ने पं. नेहरू के इन पत्रों का हिंदी में अनुवाद किया था। दिल्ली विश्वविद्यालय के प्रोफेसर डॉ. गोयनका ने कहा कि १९७२ में प्रेमचंद पर पीएच. डी के बाद, उन्हें प्रेमचंद द्वारा रचित १५०० से अधिक पृष्ठों की घुसपैठ सामग्री मिली। इसमें ३०.नई कहानियां मिली। प्रोफेसर महावीर सरन जैन ने प्रेमचंद के विचारों की भाषाई प्रकृति का विश्लेषण किया।

उपसंहार:

प्रेमचंद ने अपने जीवन में कई अद्भुत रचनाएँ लिखी हैं। तब से लेकर आज तक हिंदी साहित्य में उनके जैसा न कोई हुआ और न कोई होगा। अपने जीवन के अंत में एक वर्ष को छोड़कर, उन्होंने अपना पूरा समय वाराणसी और लखनऊ में बिताया, जहाँ उन्होंने कई पत्रिकाओं का संपादन किया और अपने स्वयं के साहित्य का निर्माण जारी रखा।

संदर्भ:

१. प्रेमचन्द: जीवन परिचय (हिन्दी)। अभिगमन, २०१०, हिन्दी साहित्य का इतिहास, अध्याय १६, पृ. ७७४.
२. नगेन्द्र, ३३ वां संस्करण - २००७, मयूर पेपरबैक्स, नौएडा
३. चन्द्रवंशी डी. पी., 'हिन्दी उपन्यास के क्षेत्र में प्रेमचन्द्र का योगदान' रिसर्च जर्नल ऑफ़ ह्युमनिटी एंड सोशल सायन्स, २०१५.
४. प्रेमचंद कर्मभूमि, राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड, नई दिल्ली, १९९४